Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
May 19, 2020
kumar9999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

Class B.A. Part 1 (H & Subsl.)

Topic :- सत्कार्यवाद के रूप

सांख्य दर्शन अपने कार्य कारण सिद्धांत को सत्कार्यवाद के नाम से विभूषित करता है। सत्कार्यवाद को प्रमाणित करने के सांख्य दर्शन में कई प्रमाणों को प्रस्तुत किया गया है जिसे एक कारिका द्वारा इस प्रकार सांख्य दर्शन में रखा गया है:-

असद्कारणादुपादाणग्रहणात् सर्वसम्भवाऽभावात्।
शाक्ततस्य शाक्यकरणात् कारणभावाच्य सत्कार्यम्।।

अब सत्कार्यवाद के सामने एक प्रश्न उठता है -- कि क्या कार्य कारण का वास्तविक रूपांतरण है? इस प्रश्न के दो उत्तर दिए गए हैं, एक भावात्मक दूसरा निषेधात्मक। भावात्मक उत्तर से परिणामवाद तथा निषेधात्मक उत्तर से विवर्तवाद नामक दो सिद्धांतों का प्रादुर्भाव हुआ इस प्रकार परिणामवाद और विवर्तवाद सत्कार्यवाद के दो रूप हो जाते हैं।

सांख्य, योग, विशिष्टद्वैत (रामानुज) ऊपर लिखित प्रश्नों का भावात्मक उत्तर देकर परिणामवाद के समर्थक हो जाते हैं। इन दर्शनों के अनुसार जब कारण से कार्य का निर्माण होता है तो कार्य में कारण का वास्तविक रूपांतरण हो जाता है। कार्य कारण का बदला हुआ रूप है। मिट्टी से जब घड़े का निर्माण होता है तब मिट्टी का पूर्ण परिवर्तन घड़े में होता है। जब दूध से दही का निर्माण होता है तब दूध का परिवर्तन दही के रूप में हो जाता है। परिणामवादियों के अनुसार कार्य कारण का परिणाम होता है। सांख्य के मतानुसार समस्त विश्व प्रकृति का ही परिवर्तित रूप है। प्रकृति का रूपांतर संसार की विभिन्न वस्तुओं में होता है। रामानुज के अनुसार समस्त विश्व ब्रह्म का रूपांतरित रूप है क्योंकि ब्रह्म विश्व का कारण है। चूंकि सांख्य के समस्त विश्व को प्रकृति का परिणाम मानता है इसलिए इनके मत को प्रकृति परिणामवाद कहा जाता है। इसके विपरीत रामानुज के मत को ब्रह्म परिणामवाद कहा जाता है क्योंकि वह विश्व को ब्रह्म का परिणाम मानते हैं। प्रकृति परिणामवाद और ब्रह्म परिणामवाद परिणाम वाद के ही दो रूप हैं। सत्कार्यवादा और परिणाम वाद के भिन्न-भिन्न रूपों को एक नामावली में इस चित्र द्वारा दर्शाया जा सकता है।

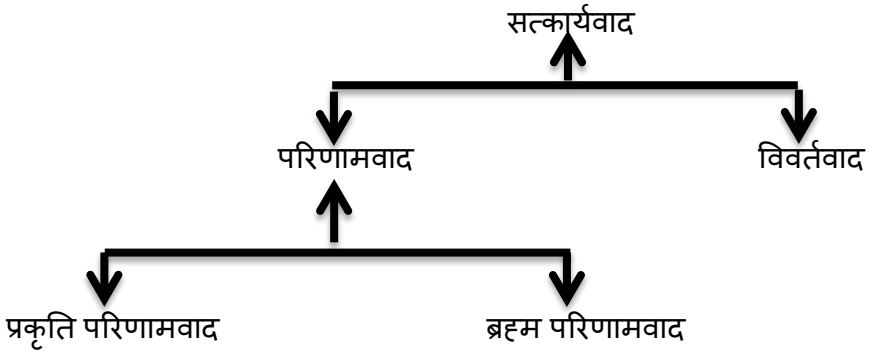

Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
May 19, 2020
kumar9999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

शंकर सत्कार्यवाद को मानने के कारण सत्कार्यवादी हैं। परंतु परिणामवाद का सिद्धांत शंकर को मान्य नहीं है। वह परिणामवाद की कटु आलोचना करते हैं। उनके अनुसार कार्य को कारण का परिणाम कहना अनुपयुक्त है। कार्य और कारण में आकार को लेकर भेद होता है। मिट्टी जिससे घड़े का निर्माण होता है, घड़े से आकार को लेकर भिन्न है। कार्य का आकार कारण में वर्तमान नहीं है। इसलिए कार्य के निर्मित हो जाने से यह मानना पड़ता है कि असत् से सत् का प्रादुर्भाव हुआ। इस प्रकार सांख्य परिणामवाद को अपनाकर सत्कार्यवाद के सिद्धांत का स्वयं ही खंडन करता है। अतः सचमुच परिणामवाद सत्कार्यवाद के लिए घातक प्रतीत होता है।

शंकर प्रश्न करते हैं कि क्या कार्य कारण का वास्तविक रूपांतर है? इसका उत्तर निषेधात्मक देकर शंकराचार्य विवर्तवाद के प्रवर्तक हो जाते हैं । कार्य कारण का विवर्तन मात्र है। देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि कार्य कारण का वास्तविक रूपांतर है, किंतु वास्तविकता दूसरी रहती है। कारण का कार्य में परिवर्तित होना एक आभास मात्र है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। अंधकार में हम रस्सी को कभी-कभी सांप समझ लेते हैं। रस्सी में सांप की प्रतीति होती है। परंतु इससे रस्सी साँप में परिवर्तित नहीं हो जाती। मिट्टी से घड़े का निर्माण होता है। घड़ा मिट्टी का वास्तविक रूपांतर नहीं है यद्यपि ऐसा प्रतीत होता है कि घड़ा मिट्टी का बदला हुआ रूप है। प्रतीति (appearance) वास्तविकता (reality) से भिन्न है। शंकर के अनुसार विश्व का कारण ब्रह्म है। परंतु ब्रह्म का रूपांतर विश्व के रूप में नहीं होता। ब्रह्म सत्य है। विश्व इसके विपरीत असत्य (unreal) है। जो सत्य है उसका परिवर्तन असत्य में कैसे हो सकता है? ब्रह्म एक है, परंतु विश्व इसके विपरीत विविधता से परिपूर्ण है। एक ब्रह्म का रूपांतर नाना रूपात्मक जगत में कैसे संभव हो सकता है? फिर प्रश्न है कि ब्रह्मा परिवर्तनशील है किंतु विश्व परिवर्तनशील है और अपरिवर्तनशील वस्तु का रूपांतर कैसे संभव है? अपरिवर्तनशील ब्रह्म का रूपांतर परिवर्तनशील विश्व के रूप में मानना भ्रांतिमूलक है। शंकर ने जगत को ब्रह्म का विवर्त माना है। शंकर के इस मत को ब्रह्मविवर्तवाद कहा जाता है। उनका सारा दर्शन विवर्तवाद के सिद्धांत पर आधारित है।

परिणामवाद और विवर्तवाद की व्याख्या हो जाने के बाद अब हम परिणामवाद और विवर्तवाद के बीच की विभिन्नताओं पर विचार करेंगे। परंतु दोनों की विषमताओं को जानने के पूर्व दोनों के बीच विद्यमान समता पर विचार करना अथवा प्रकाश डालना आपेक्षित है।

परिणामवाद और विवर्तवाद दोनों मानते हैं कि कार्य की सत्ता की उत्पत्ति के पूर्व अपने कारण में निहित रहता है। कारण और कार्य एक ही वस्तु के दो भिन्न-भिन्न अवस्थाएं हैं। सत्कार्यवाद के दो रूप परिणामवाद और विवर्तवाद हैं। इसलिए दोनों को सत्कार्यवाद में समाविष्ट किया जाता है। इन दोनों सिद्धांतों में इस एक समता के अतिरिक्त अनेक विषमताएं हैं।

1. परिणामवाद के अनुसार कार्य कारण में का वास्तविक परिवर्तन है। परंतु विवर्तवाद के अनुसार कार्य कारण का अवास्तविक परिवर्तन है। परिणामवाद दही अर्थात कार्य को दूध अर्थात कारण का वास्तविक परिवर्तन मानता है। परंतु विवर्तवाद सांप (कार्य) को रस्सी (कारण) के रूप में अवास्तविक परिवर्तन

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
May 19, 2020
kumar9999sonu@gmail.com
8210837290,
8271817619

मानता है। रस्सी में सांप का आभास होने से रस्सी का साँप में परिवर्तन नहीं हो जाता। इस प्रकार विवर्तवाद और परिणामवाद में प्रथम अंतर यह है कि परिणामवाद वास्तविक परिवर्तन में विश्वास करता है परंतु विवर्तवाद आभास परिवर्तन में विश्वास करता है।

2. परिणाम वाद और विवर्तवाद के में दूसरा अंतर यह है कि परिणामवाद कार्य को कारण का परिणाम मानता है। परंतु विवर्तवाद कार्य को कारण का विवर्त (appearance) मानता है। दूध से दही का निर्मित होना परिणामवाद का उदाहरण है और रस्सी में सांप की प्रतीति होना विवर्तवाद का उदाहरण है। परिणामवाद के अनुसार कार्य कारण का रूपांतरित रूप है। परंतु विवर्तवाद इसके विपरीत कार्य को कारण का रूपांतरित रूप नहीं मानता। हमें ऐसा प्रतीत होता है कि कार्य कारण का रूपांतर है परंतु प्रतीति को वास्तविकता कहना भूल है।
3. परिणामवाद और विवर्तवाद में तीसरी भिन्नता यह है कि परिणाम वाद कारण और कार्य दोनों को सत्य मानता है। परंतु विवर्तवाद सिर्फ कारण को सत्य मानता है। परिणामवाद के अनुसार कार्य कारण का यथार्थ रूपांतरण है। मिट्टी से बना घड़ा मिट्टी का वास्तविक रूपांतर है। जिस प्रकार मिट्टी वास्तविक है उसी प्रकार घड़ा भी वास्तविक है। अतः परिणामवाद के अनुसार कार्य और कारण दोनों सत्य हैं। परंतु विवर्तवाद में कार्य और कारण दोनों को सत्य नहीं माना जाता है। कार्य कारण का आभास मात्र है। उदाहरण के लिए कहा जा सकता है कि अंधकार में हम रस्सी को सांप समझ लेते हैं। रस्सी कारण है, सांप कार्य है। रस्सी यथार्थ है परंतु सांप अयथार्थ है। विवर्तवाद के समर्थक शंकर ने ब्रह्म को सत्य माना है क्योंकि वह विश्व का कारण है। विश्व को, जो कि कार्य है असत्य माना है।

इससे सिद्ध होता है कि विवर्तवाद में सिर्फ कारण को सत्य माना गया है, कार्य को पूर्णतः असत्य माना गया है।

Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
Department of Philosophy
Mobile 8210837290
Whatsapp 8271817619
E-mail Id – kumar999sonu@gmail.com